CHAPTER 20

दूसरा देवदास

पृष्ठ संख्या: 158

प्रश्न संख्या : 1

पाठ के आधार पर हर की पौड़ी पर होने वाली गंगाजी की आरती का भावपूर्ण वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर - हम हरकी पौड़ी नामक एक घाट पर गए। हम शाम की आरती का इंतजार करने लगे। शाम के समय घाट पर विभिन्न प्रकार के दीप जलाए गए। आरती शुरू हुई। पूरे घाट पर मां गंगा की आरती गूंज उठी। गंगा माँ बड़े दीपों से जगमगा उठीं। ऐसा लग रहा था जैसे गंगा में इन दीयों की सोने जैसी रोशनी मिल रही हो। ऐसा दृश्य देखकर मेरी आँखें उत्तेजित हो गईं। मैंने जीवन में कभी भी परम शांति और आनंद का अनुभव नहीं किया। मेरी रगों में भक्ति की भावना बहने लगी। आरती के बाद हम बहुत देर तक माँ गंगा के पवित्र जल में डूबे रहे। ऐसा लग रहा था मानो माँ गंगा मुझे हमेशा जीवित रहने का आशीर्वाद दे रही हैं।

पृष्ठ संख्या : 158

प्रश्न संख्या: 2

'गंगापुत्र के लिए गंगा मैया ही जीविका और जीवन है '- इस कथन के आधार पर गंगा पुत्रों के जीवन -परिवेश की चर्चा कीजिए।

उत्तर - गंगापुत्र वे हैं जो गंगा मैया को चढ़ाया हुआ धन गंगा की धाराओं के बीच में लाते हैं। लोग गंगा नदी पर पैसा डालते हैं गंगापुत्र उन पैसों को गंगा जी के बहते पानी से निकालते हैं। यह काम बहुत जोखिम भरा है। लेकिन उनके पास कोई विकल्प नहीं है। उन्हें यह काम जबरदस्ती करना पड़ता है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि उनका जीवन - परिवेश बहुत अच्छा नहीं होगा। यहाँ उनके लिए दो रोटियां पाने के लिए पर्याप्त होगा।

पृष्ठ संख्या : 158

प्रश्न संख्या : 3

पुजारी ने लड़की के 'हम' को युगल अर्थ में लेकर क्या आशीर्वाद दिया और पुजारी द्वारा आशीर्वाद देने के बाद लड़के और लड़की के व्यवहार में अटपटापन क्यों आया?

उत्तर - लड़की और लड़का मंदिर में एक साथ गए थे तो पुजारी ने लड़की ने लड़की के 'हम' का अर्थ समझा की वे

दोनों पति-पत्नी है। पुजारी ने इस भ्रम में लड़की को आशीर्वाद दिया कि वे हमेशा साथ रहे। पुजारी के इस आशीर्वाद के बाद लड़के और लड़की दोनों असहज हो गए । लड़की ने हम शब्द का प्रयोग किया था इसलिए वह लड़के से आँखे नहीं मिला पा रही थी और दोनों एकदूसरे से अटपटा व्यवहार करने लगे।

पृष्ठ संख्या : 158

प्रश्न संख्या : 4

उस छोटी-सी मुलाकात ने संभव के मन में क्या हलचल उत्पन्न कर दी? इसका सूक्ष्म विवेचन कीजिए।

उत्तर - लडकी से मंदिर में छोटी सी मुलकात के कारण संभव के मन प्रेम की भावना उत्पन्न हो गयी थी । आज तक कसी भी लड़की के लिए उसके मन में ऐसी भावना नहीं आई थी । परन्तु उस लडकी के सौदर्य के कारण वह मोहित हो गया था तथा उस से प्रेम कर बैठा था। उस लड़की की प्राप्ति के लिए वह बेचैन था तथा कुछ भी करने को तैयार था।

पृष्ठ संख्या : 158

प्रश्न संख्या : 5

मंसा देवी जाने के लिए केबिल कार में बैठे हुए संभव के मन में जो कल्पनाएँ उठ रही थीं, उनका वर्णन कीजिए।

उत्तर - मंशा देवी के मंदिर जाने के लिए जब संभव केबिल कार में बैठा था तो उसके मन में अनेक कल्पनाएँ उठ रही थी। उसकी कल्पना उस लड़की से मिलने की तथा उसे पाने की थी। वह इस कल्पना के साथ मंदिर जा रहा था की वह लड़की से वहां भेंट कर सकेगा।

पृष्ठ संख्या : 158

प्रश्न संख्या: 6

"पारो बुआ, पारो बुआ इनका नाम है..... उसे भी मनोकामना का पीला-लाल धागा और उसमें पड़ी गिठान का मधुर स्मरण हो आया।" कथन के आधार पर कहानी के संकेत पूर्ण आशय पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर - लड़की के भाई के बच्चे ने उसे पारो बुआ कहकर संबोधित किया तब संभव देवदास की रचना में खो गया । संभव सोचने लगा की उसकी प्रेमिका भी पारो है और देवदास की प्रेमिका भी पारो ही थी। उसने इस पारो को पाने के लिए मन्नत का धागा मंशा देवी के मंदिर में बांध आया था तथा

अपने साथ उस लड़की का मधुर स्मरण लेकर वापस आया था।

पृष्ठ संख्या : 158

प्रश्न संख्या: 7

'मनोकामना की गाँठ भी अद्भुत अनूठी है , इधर बाँधो उधर लग जाती है। ' कथन के आधार पर पारो की मनोदशा का वर्णन दीजिए।

उत्तर - पारो की दशा का वर्णन इस पंक्ति से होता है। पारो अपने मन में यह पंक्ति बोलती है। इस पंक्ति से पता चलता है कि संभव पहली मुलाकात में ही पारो के दिल में जगह पा चूका था। दोनों में मिलन की बेचैनी समान थी। संभव की भांति उसने भी मनसा देवी में चुनरी बंधी थी ताकि संम्भव से मिल सके। संभव को देखकर उसकी मन्नत पूरी हो गयी।

पृष्ठ संख्या : 158

प्रश्न संख्या: 8

निम्नलिखित वाक्यों का आशय स्पष्ट कीजिएः

(क) 'तुझे तो तैरना भी न आवे। कहीं पैर फिसल जाता तो मैं तेरी माँ को कौन मुँह दिखाती।'

(ख) 'उसके चेहरे पर इतना विभोर विनीत भाव था मानो उसने अपना सारा अहम् त्याग दिया है, उसके अंदर स्व से जनति कोई-कुंठा शेष नहीं है , वह शुद्ध रूप से चेतन स्वरूप , आत्माराम और निर्मलानंद है।'

(ग) 'एकदम अंदर के प्रकोष्ठ में चामुंडा रूप धरिणी मंसादेवी स्थापित थी। व्यापार यहाँ भी था।

उत्तर -

(क) संभव नानी के घर देर से आया था तब नानी ने संभव से कहा की मुझे चिंता हो रही थी कि कही गंगा में स्नान के समय तेरा पैर फिसल जाने से गुणगा में गिर नहीं गया हो। तुझे तैरना भी नहीं आता है । अगर तुझे कुछ हो जाता तो तुम्हरी माँ को मैं क्या बताती।

(ख) संभव ने गंगा नदी के मध्य में एक व्यक्ति को देखा जो सूर्य को जल अर्पित कर रहा था। उनके चेहरे पर भक्ति तथा शांति का भाव था। उनके चेहरे को देखने पर ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उन्होंने अपने अंदर के अहंकार का त्याग कर दिया है। अहंकार ही मनुष्य के दुख कारण है।

एक बार अहंकार छोड़ देने पर हृदय में किसी बात का दुःख , ग्लानि और कुंठा नहीं रहती है। मन पवित्र हो जाता है।

(ग) इन पंक्तियों के द्वारा संभव चामुंडा मंदिर का वर्णन कर रहा है। संभव ने मंदिर के अंदर चामुंडा रूप में स्थपित मंशा देवी के दर्शन किये तथा मंदिर के आस पास की व्यापारिक गतिविधियों को ध्यान से देखा।

पृष्ठ संख्या : 159

प्रश्न संख्या: 9

'दूसरा देवदास' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - इस कहानी का पात्र संभव अपनी प्रेमिका से मिलने के लिए व्याकुल रहता है जिस तरह शरतचन्द्र के नाटक में देवदास परारो से मिलने के लिए व्याकुल रहता है। अतः इस कहानी का शीर्षक 'दूसरा देवदास ' सार्थक शीर्षक है। पारो की एक झलक में वह उसका दीवाना हो जाता है। उसकी खोज में वह मंशा देवी के मंदिर भी हो आता है। पारो से मिलान के लिए मन्नत भी मांगता है। जब वह पारो से मिलता है तब उसे अपना जीवन सार्थक लगता है।

पृष्ठ संख्या :159

प्रश्न संख्या: 10

'हे ईश्वर ! उसने कब सोचा था कि मनोकामना का मौन उद्‌गार इतनी शीघ्र शुभ परिणाम दिखाएगा -आशय स्पष्ट कीजिए।'

उत्तर - पारो को अपने सामने देखकर उसके दिमाग में यह वाक्य पैदा हुआ। वह लड़की , जिसे उसने कुछ समय पहले मनसा देवी में धागा बांधा था, देवी मंदिर के बाहर मिली थी। पारो को देखकर वह प्रसन्न हो गया। आज उनकी इच्छा ऐसे शुभ परिणाम लेकर आई।

पृष्ठ संख्या : 159

प्रश्न संख्या: 1

इस पाठ का शिल्प आख्याता (नैरेटर-लेखक) की ओर से लिखते हुए बना है- पाठ से कुछ उदाहरण देकर सिद्ध कीजिए।

उत्तर - पाठ से उदाहरण कुछ इस प्रकार हैं-

(क) गंगा सभा के स्वयंसेवक खाकी वरदी में मुस्तैदी से घूम रहे हैं।

(ख) यकायक सहस्र दीप जल उठते हैं पंडित अपने आसन से उठ खड़े होते हैं।

(ग) दूसरे यह दृश्य देखने पर मालूम होता है कि वे अपना संबोधन गंगाजी के गर्भ तक पहुँचा रहे हैं।

(घ) संभव हँसा। उसके एक सार खूबसूरत दाँत साँवले चेहरे पर फब उठे।

पृष्ठ संख्या : 159

प्रश्न संख्या: 2

पाठ में आए पूजा-अर्चना के शब्दों तथा इनसे संबंधित वाक्यों को छाँटकर लिखिए।

उत्तर -

(क) दीया-बाती- दीया-बाती का समय या कह लो आरती की बेला।

(ख) आरती- आरती शुरू होने वाली थी।

(ग) नीलांजलि- पीतल की नीलांजलि में सहस्र बत्तियाँ घी में भिगोकर रखी हुई हैं।

(घ) मूर्तियों- गंगा जी की मूर्ति के साथ -साथ चामुंडा , बालकृष्ण, राधाकृष्ण, हनुमान, सीताराम की मूर्तियों की श्रृंगारपूर्ण स्थापना है।

(ङ) स्नान- आरती से पहले स्नान!

(च) चंदन और सिंदूर - हर के पास चंदन और सिंदूर की कटोरी है।